ज्ञान है बहुत सहज। अंधे, लूले हों तो भी उंच पद पाय सकते हैं। इशारे से समझ सकते हैं। यह फादर बाप है। इनको याद करो। समझ में आ जाये कि बाप को याद करना है तो भी कल्याण है। फिर विकर्म विनाश हो जायेंगे। यह तो जरूर है, जाना तो सबको है। विनाश होता है तो खियाल खलास हो जाता है। तो जिस धर्म का होगा अपने सैक्शन में चला जावेगा। यहां तो मिक्स हैं ना। यह बच्चे जानते हैं सब धर्म वाले अपने2 सैक्शन में जाकर ठहरेंगे। बाप कहते हैं कल्प पहले भी तुम विश्व के मालिक थे। यह शिक्षा पाई थी। तुम बच्चे रास्ता बहुत सहज बताते हो। बाप समझाते हैं कि जास्ती न समझे तो सब बातों से हटाय कर बोलो तुम आत्मा हो। सब आत्माओं का एक बाप है। वह नई दुनियां का रचयिता है। पुरानी दुनियां तो नहीं क्रियेट करेंगे। यह परिचय देकर बोलो बेहद के बाप को याद करो। यह है पुरानी कलियुगी दुनिया। ओल्ड वर्ल्ड है। सतयुग न्यू वर्ल्ड पास्ट हो गई है। .....बाप रचता है नई दुनिया का। इसमें तुम कोई की ग्लानी आदि नहीं करते हो। बोलो बाबा समझाते हैं इस समय जो कुछ है भक्तिमार्ग। ज्ञान सागर एक को कहा जाता है। वही सर्व का सदगतिदाता ,पतित–पावन है। यह पक्का2 याद कर लो। बाप ऐसे कहते हैं मैं आकर नई दुनियां रचता हूं। पुरानी दुनियां खतम हो जानी है। यह नई दुनियां थी तो यह नहीं थी। अब यह नहीं है। फिर स्थापन हो रही है इनकी राजधानी। बाप को याद करने से पावन बन जावेंगे। ये वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी को जानना है अथवा त्रिकालदर्शी बनना है तो फिर चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। यह ढिंढोरा पीटते रहो। यह खयाल न करो कि थोड़े आते हैं, टिकते नहीं। बाप कहते हैं कोटों में कोई यथार्थ रीति से आवेंगे। वो ही वारिस बनेंगे। ड्रामा अनुसार तुम पुरुषार्थ जरूर करते हो। इसलिए (फिकर) की बात नहीं। ड्रामा तुमको पुरुषार्थ जरूर करावेंगे। चिंता तो बाबा को होनी चाहिए। यहां सर्विस नहीं है। यह है तुम तो बिल्कुल बेफिकर रहो। बाबा हर एक को जानता है। ड्रामा अनुसार। पुरुषार्थ करना है। तुम रह न सकेंगे पुरुषार्थ बिगर। अगर रह जाये तो कहेंगे इनकी तकदीर में नहीं है। पुरुषार्थ भी पूरा। जितना हो सके पढ़ाई का रिगार्ड रखना चाहिए। एक दिन भी मुरली मिस न करनी चाहिए। बाबा कहते हैं जो भी मुरली पढ़ो यहां बैठकर पढ़ो नहीं तो एफसेंट पड़ जावेगी। गॉडली स्अुडेंट को क्लास कब मिस न करना चाहिए। बड़े ते बड़ा पद है। कोई भी बात है तो बाप से पूछ सकते हो। पूछने के लिए बैठ पूछो। एक सेकेंड में तुम्हारी सब बातें उड़ाय देंगे। बाबा को याद करते हो और चक्र को याद करते हो। बाकी क्या है?और बातों को छोड़ दो। समझ तो मिली है। पाप आत्मा का अन्न नहीं खाना है। तुम जानते हो हम सारे विश्व को पवित्र बनाते हैं। तुम ही गोप–गोपियां हो जो अंगुली देती हो दुनियां को पलटने में। अर्थ यह तुम ही समझते हो। तुम्हारे द्वारा भारत..... । तुमको राज्य मिलना ही है। बात है सतोप्रधान बनना है पुरुषार्थ से। तुम बच्चे बहुत खुशी में रहेंगे तो सर्विस भी करेंगे। बहुत लिखते हैं कि हम छोड़ देवें नौकरी। पैसा क्या करेंगे?जो गवर्मेंट की सर्विस करते हैं तो गवर्मेंट से खर्चा मिलता है। यहां भी सर्विस की। डिससर्विस न करें। यहां बैठे हो ,खाना तो मिलता है न। बाप को याद करना है। शरीर निर्वाह लिए भी सर्विस करते हैं। वो कर्म करते फिर भी तुम सब गॉडली सर्विस पर हो। बाप को याद करो, 84के चक्र को याद करो। उल्टा–सुल्टा कुछ पूछे तो बोलो बाप ने कहा है मामेकम् याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। बस रचता और रचना को जाना है। जितना पुरुषार्थ करना है करते रहो। तंग न होवें। गॉडली सर्विस को छोड़ो नहीं। तुम्हारी सर्विस हो रही है। समझेंगे भी नम्बरवार। सब एक जैसा थोड़ा ही समझेंगे। पुरुषाथ अभी करना है। तकलीफ तो कोई नहीं है। डबल सिरताज बनना है या इनकी राजधानी में जाना है?सुख को यथा राजा–रानी तथा प्रजा को है। इस समय सारी दुनियां में दुःख ही दुःख है। सुख है अल्पकाल क्षणभंगुर। सारी नालेज तो बच्चों की बुद्धि में है। ओमशांति।